भारत और भारतीयता के अनन्य उपासक

राधामोहन गोकुल जी



श्री सत्यभक्त

पूर्व सम्पादक 'चाँद' 'सतयुग' 'प्रणवीर'

युग निर्माण योजना मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

SHRI CHANDUBHAI PATEL,
GONDAL, GUJARAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भारत और भारतीयता के अनन्य उपासक

राधामोहन गोकुलजी

सन् अठारह सौ सत्तावन के गदर (अथवा भारतीय स्वाधीनता संग्राम) के पश्चात् अँगरेज शासकों ने इस देश में जो दमनचक्र चलाया, उसके परिणाम स्वरूप जनता के हृदयों में घोर आतंक और भय की भावना ने घर कर लिया था। राजनीति अथवा स्वाधीनता की चर्चा एकान्त में भी करते हुये लोगों को भय लगता था, और उनके मन में यह विचार जड़ पकड़ने लगा था कि हम अँगरेजों की अदम्य सैनिक-शक्ति का कभी मुकाबला नहीं कर सकते। जब इस घटना को १५--२० वर्ष बीत गये और एक ऐसी नई पीढ़ी तैयार हो गई; जो गदर के समय नितान्त बाल्यावस्था में थी और इस कारण दमन की विभीषिका से सर्वथा अपरिचित थी, तब पुनः 'देशोन्नति' और 'देशोद्धार' की चर्चा सुनाई पड़ने लगी। लोकमान्य तिलक और अन्य मनीषियों ने 'भारतीयता" और "हिन्दू संस्कृति" जैसी भावनाओं को जागृत करने के लिये उद्योग आरम्भ किया और विदेशी संस्कृति की तरफ अग्रसर होते हुये देशवासियों को "अपना देश, अपना वेष, अपनी भाषा, अपना धर्म" का सन्देश सुनाने लगे।

देश के ऐसे ही वातावरण में कुछ प्रमुख नगरों में "स्वदेशी-आन्दोलन" का सूत्रपात हुआ। यह सन् १९०५ (उन्नीस सौ पाँच) में बंगभंग के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाले प्रचण्ड स्वदेशी आन्दोलन का पूर्वरूप (बीज बोने वाला) था और उसमें केवल थोड़े से प्रबुद्ध व्यक्तियों ने ही भाग लिया था। इलाहाबाद में भी इसके लिये कुछ आयोजन किया गया और देशभक्त वक्ताओं ने बताया कि किस प्रकार अँगरेज व्यापारी भारत के छोटे-मोटे उद्योगों को नष्ट करके यहाँ की सम्पति को विदेश ले जा रहे हैं और इस देश में बेकारी की वृद्धि कर रहे हैं। श्रोताओं में एक बीस वर्षीय नवयुवक भी था, जिस पर इन उद्‌गारों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

का बड़ा प्रभाव पड़ा। यद्यपि उस समय उसकी आर्थिक अवस्था बड़ी निर्बल थी और उसे निर्वाह के लिये पर्याप्त संघर्ष करना पड़ रहा था, तो भी देशहित की प्रेरणादायक बातें सुनकर उसने आजीवन स्वदेशी वस्त्र व्यवहार का व्रत ले लिया और सभास्थल में ही प्रस्तावित स्वदेशी का प्रचार करने वाली कम्पनी का २५) का एक शेयर खरीद लिया। सौभाग्यवश यह संस्था चिरजीवी सिद्ध हुई, और इन पंक्तियों के लेखक ने अभी हाल तक उसे "देशी कारवार कम्पनी" के नाम से इलाहाबाद के चौक बाजार में व्यवसाय करते देखा था। सन् १८८५ (अठारह सौ पिच्यासी) में देशभक्ति और राष्ट्रीयता की भावनाओं से प्रेरित होकर एक शेयर खरीदने वाला यह गरीब नवयुवक राधामोहन गोकुलजी ही थे, जिन्होंने आगे चल कर अपना समस्त जीवन देश, जाति और समाज की सेवा में लगा दिया।

इसी वर्ष "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस" का जन्म हुआ। उसका प्रथम अधिवेशन बम्बई में हुआ, और वहाँ पर जो प्रस्ताव पास किये गये उनका प्रचार करने के लिये इलाहाबाद के देशभक्तों ने भी एक सभा की। उसकी अध्यक्षता उस जमाने के एक सुप्रसिद्ध वकील पं० सुन्दरलाल ने की थी और प्रधान वक्ता पं० मदन मोहन मालवीय थे। मालवीयजी आरम्भ से ही भाषण-कला में अद्वितीय थे। उनके उद्‌गारों का प्रभाव राधामोहनजी पर भी खूब पड़ा और उनके राजनैतिक जीवन का श्रीगणेश भी उसी समय से हो गया।

जीविकोपार्जन के लिये कई स्थानों पर संघर्ष करते हुये उपर्युक्त घटना के तीन-चार वर्ष बाद ये कानपुर आ गये। वहाँ कोई ठीक कार्य इनको मिला या नहीं यह तो विदित नहीं, पर हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री प्रताप नारायण मिश्र के सम्पर्क में आने से हिन्दी-प्रेम का रंग इन पर खूब चढ़ गया। प्रताप नारायणजी भारतीय संस्कृति के कट्टर भक्त थे और उनका आदर्श था—"सब मिल बोलहु एक जवान—हिन्दी हिन्दू हिन्दुस्तान।" राधामोहन जी भी इसी मंत्र के उपासक बन गये और आजीवन इस पर दृढ रहे। यहाँ तक कि ये मिश्रजी को सहयोग देने की इच्छा से उनके द्वारा प्रकाशित "ब्राह्मण" मासिक पत्र के आनरैरी मैनेजर बनकर उसका प्रचार बढ़ाने में दत्तचित्त हो गये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हमने इनका नाम "ब्राह्मण" के कई अंकों में मैनेजर के स्थान पर छपा देखा है। इनका यह मातृ-भाषा प्रेम भी निरन्तर बढ़ता गया और आगे चल कर ये हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक और सम्पादक बने।

राजनीति ही नहीं समाज और धर्म के भी क्रांतिकारी

श्री राधामोहन जी (जन्म १८६५ और मृत्यु १९३५—सन् अठारह सौ पैंसठ से उन्नीस पैंतीस तक) के पूर्वज खेतडी (राजस्थान) के निवासी थे जो जीविका के लिये इलाहाबाद के निकट भदरी नामक स्थान में बस गये थे। वहीं इनका जन्म पौष कृष्ण १३ सम्बत् १९२२ के दिन ला० गोकुलचन्द के घर में हुआ। आगे चल कर रोजगार के सिलसिले में ही राधामोहन जी इलाहाबाद, कानपुर आदि कई स्थानों में रहे और अन्त में आगरे में स्थायी रूप से बस गये। सन् १९०४ में स्वदेशी आन्दोलन छिड़ने पर ये अकेले ही कलकत्ता पहुँच गये, जहाँ एक दृष्टि से इनके सार्वजनिक जीवन का श्रीगणेश हुआ। दो-चार वर्ष के भीतर ही वहाँ क्रान्तिकारी आन्दोलन ने जोर पकड़ लिया, उग्र विचारों के अनुयायी होने के कारण राधामोहन जी भी उसमें भाग लेने लगे।

पर राधामोहनजी राजनैतिक दृष्टि से ही क्रांतिकारी नहीं थे, उससे भी बढ़कर वे सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रों में क्रांति के पक्षपाती थे। लगभग तीस वर्ष की आयु में जब उनकी पत्नी का देहान्त हुआ और उनके परिवार वालों ने दुबारा विवाह करने का आग्रह किया तो इन्होंने स्पष्ट कह दिया कि यदि अब विवाह करूँगा तो विधवा के साथ ही करूँगा, क्योंकि छोटी आयु की कन्या के साथ एक प्रौढ़ व्यक्ति के विवाह करने का कोई औचित्य नहीं है। जब उनके माता-पिता ने प्राचीन प्रथानुसार विवाह करने के लिये बहुत दबाया तो वे घर को छोड़ कर भाग गये। वहाँ से लौटकर वैश्य समाज के प्रसिद्ध समाज सुधारक राय बहादुर ला० बैजनाथ के सम्पर्क में आकर कई वर्ष तक समाज--सुधार के एक प्रचारक के रूप में काम करते रहे। कलकत्ते में भी कुछ ही समय बाद जात-पाँत की समस्याओं को लेकर पुराने ढर्रे के पंडितों, पुरोहितों से मतभेद हो गया तो इन्होंने "सत्य सनातन धर्म" के नाम से एक साप्ताहिक पत्र निकाल कर रूढ़िवादियों की खूब खबर ली। "सत्य सनातन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धर्म" आर्य समाज का भी जोरदार समर्थक था और धर्म तथा परम्परा के नाम पर प्रचलित सामाजिक कुरीतियों का डट कर विरोध करता था। राजनीतिक दृष्टि से वह लोकमान्य तिलक का अनुयायी था और उस समय के नवयुवक उसके गर्मागर्म लेखों को बहुत पसन्द करते थे।

सन् १९०४ में ही आगरा आर्य-समाज में एक मुसलमान को शुद्ध किया गया। उस अवसर पर अन्य अनेक व्यक्तियों के साथ उसके हाथ से बांटी गई मिठाई इन्होंने भी खाई थी। इस घटना को लेकर पुराण-पंथियों ने बड़ा शोर-गुल मचाया। इस पर इनकी माता ने इनको समझाया कि "तू मिठाई खाने से इनकार करदे" पर इन्होंने इस बात को स्वीकार नहीं किया। वे हिन्दू-समाज के पक्के सुधारक थे, इसलिये रूढ़िवादियों के सामने डटे रहे। यह घटना वैसी ही हुई जिस प्रकार महाराष्ट्र के महान नेता श्री० महादेव गोविन्द रानाडे के ईसाइयों के एक उत्सव में उनके हाथ की चाय पी लेने पर हुई थी। महाराष्ट्रीय ब्राह्मणों ने इस पर बड़ा हल्ला-गुल्ला मचाया और चाय पीने वाले सभी लोगों को जाति बहिष्कृत करने का निर्णय किया। श्री रानाडे यद्यपि अग्रगण्य समाज-सुधारक थे, तो भी घर वालों के आग्रह से विवश होकर प्रायश्चित करने को सहमत हो गये। पर राधामोहन जी स्वभाव से उग्रवादी थे, इस लिये इन्होंने कभी जाति के 'पंचों' या 'पुराने लोगों' की पर्वाह नहीं की और जन्म भर इसी प्रकार सामाजिक कुरीतियों को अमान्य करते रहे। यद्यपि ये जातीयता के सुदृढ़ समर्थक थे और भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिये सदा कटिबद्ध रहते थे, पर ऐसी रूढ़ियों और परम्पराओं को स्वीकार करने को हर्गिज तैयार नहीं होते थे जो समयानुकूल न रही हों और जिनसे देश और जाति में किसी प्रकार की हीनता आती हो।

सच्चे धर्म के अनुयायी—

राधामोहनजी के धार्मिक विचार बहुत सुलझे हुये थे। इस दृष्टि से वे किसी शास्त्र, आचार्य अथवा सम्प्रदाय के अनुयायी नहीं थे, वरन् अपनी स्वतंत्र बुद्धि से निर्णय करने पर जो कुछ समझ में आता था वही उनका धर्म था। उनकी आरम्भिक रचनाओं में तो जगह-जगह ईश्वर और धर्म के प्रति उसी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रकार श्रद्धा व्यक्त की गई है जैसे कोई पक्का धार्मिक व्यक्ति करता है। उनकी कविता पुस्तक "नीति छन्दावली" का प्रथम पद्य यह है—

जग उपास्य जगदीश, विघन हरण अशरण शरण ।
ताहि नवाइय शीश, जो जातिय कारण करण ।।

पर इसका आशय यह नहीं कि राधामोहनजी उस धर्म को मानते थे जिसे पण्डा-पुरोहितों ने अपना पेट भरने के लिये फैला रखा है। उस अन्ध-विश्वास पर आधारित धर्म के तो वे सदा विरोधी ही रहे, क्योंकि वह मनुष्य का आत्मोत्थान करने बजाय उसके पतन का मार्ग खोलता है। आरम्भ से ही वे उसी धर्म के अनुयायी थे जो मनुष्य को परमार्थ की प्रेरणा देता है और अन्य मनुष्यों के साथ प्रेम, सहयोग, समता का व्यवहार करने की शिक्षा देता है। उन्होंने सन् १९१२ में अपनी "नीति-दर्शन" नामक पुस्तक में लिखा था—

"भारत की आर्य जाति के दस नियमों में से दो नियम बहुत विचारणीय हैं (१) निष्पक्ष होकर सत्य के ग्रहण करने में सदैव तत्पर रहना और (२) समस्त संसार का उपकार करना ही अपना जीवनोद्देश्य मानना। इतने से ही हम को मालूम हो जाता है कि मनुष्य का धर्म वही है जो सार्वभौम और सर्व हितकारी हो। नहीं तो उसे ईश्वरीय धर्म नहीं कह सकते। हमको बहुत ही कोमलता के साथ दूसरों के स्वत्वों की रक्षा करनी चाहिये। स्वार्थी जीवन ही पशु-जीवन है। पुनः एक बात इससे और निकलती है कि हम दूसरों के साथ सर्वथा नेकी और भलाई करें, दूसरों के शुभेच्छु हों, वे चाहे जैसे हों। पर इसका यह अर्थ नहीं कि अधिकांश सृष्टि के प्राणियों को दुःख देने वाले दुष्टों के साथ भी वैसे ही बरतें जैसा कि साधुओं (सज्जनों) के साथ। नहीं, हम इन दुष्टों के शुभेच्छु तो हों, पर इनके साथ हमारा हित-साधन यही है कि शिक्षा से, दण्ड से इनको सन्मार्ग पर लावें। यदि वे तब भी न सुधरें तो उनको इस योनि से मुक्त करदें, जिससे वे दूसरी योनि में जाकर अपने किये पापों को भोगें और अधिक पाप संग्रह न करें। हमारा धर्म कहने और करने में एक-सा हो, यह नहीं कि दूसरों से तो कहें कि जो तुम्हारे एक गाल पर थप्पड़ मारे तो तुम दूसरा गाल भी उसके सामने फेर दो (जैसा ईसाई धर्म में लिखा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

है) पर स्वयं लूट-खसोट, हत्यारापन, बेईमानी, झूठ और पक्षपात का आचरण करते फिरें। हमें देखना होगा कि हमारे कर्म हमारे कथन के अनुसार ही हों ! जो आचरण नहीं करता किन्तु मुख से अच्छी बातें बकता है, वह ठग है।"

वास्तव में राधामोहन जी मानव-धर्म को मानने वाले थे, जो किसी धर्माचार्य अथवा धर्म ग्रंथ के पीछे नहीं बँधा रहता, वरन् अपनी स्वतंत्र बुद्धि से काम लेकर सदैव देश-काल के अनुसार ऐसा काम करता है जिससे सर्व साधारण का हित हो। ऐसे धर्म में सज्जनों का संरक्षण और दुष्टों का दलन भी सम्मिलित है। यह सिद्धान्त भगवान कृष्ण की "गीता" के भी अनुकूल है जिसमें स्पष्ट कहा गया है कि "परित्राणाय साधूनां विनाशायाच दुष्कृताम्"। सच्चे मानव-धर्म का अनुयायी जिस प्रकार सत्पुरुषों की सहायता, सहयोग करता है उसी प्रकार दुष्टों को दण्डित अथवा नष्ट भी करता है। राधामोहनजी आजीवन इसी सिद्धान्त के अनुयायी रहे। वर्तमान समय में हिन्दू धर्मानुयाइयों की गति-मति बहुत कुछ विपरीत हो गई है, इस लिये वे अपना आदर्श विदेशों के मैजिनी और गेरीबाल्डी जैसे महापुरुषों को मानते थे जिन्होंने वर्तमान समय में अत्याचार पीड़ितों की रक्षार्थ अपना जीवन अर्पित कर दिया। मैजिनी भगवत्गीता के वर्णन के अनुसार सच्चा आत्मज्ञानी था और उसने जो "ड्यूटीज आफ मैन" (मानव-धर्म) नाम का ग्रंथ लिखा है वह 'गीता' की तरह ही कर्म-योग और कर्तव्य-परायणता के सिद्धान्तों से परिपूर्ण है। "देशभक्त मैजिनी" नामक पुस्तक में राधामोहनजी ने मैजिनी के सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हुये लिखा है—

"मैजिनी का धर्म सार्वभौम और उच्च लक्षणों से युक्त था। "धर्म" शब्द का वास्तविक आशय "सम्मिलन" (एसोसियेशन) है, जिसके द्वारा पृथ्वी पर समानता और स्वतंत्रता की स्थापना की जा सकती है। यह लोगों को उनके स्वत्त्व और दायित्व का ज्ञान कराता है। इस तथ्य का ज्ञान केवल व्यक्तियों को नहीं जातियों को भी करा देना चाहिये कि यह सम्मिलन रूपी धर्म पृथ्वी को पवित्र करने वाला है। यह पृथ्वी को वैसा ही बनाने वाला है जैसी कि परमात्मा चाहता है कि वह बने। यही रंगमंच है जहाँ से पूर्णता प्राप्त होगी और भविष्य में मनुष्य जाति को महान तथा प्रतिष्ठित जीवन प्राप्त होगा।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मैंजिनी का शिष्य गेरीबाल्डी भी महान परोपकारी और सज्जनों की रक्षा के लिये प्राण देने वाला व्यक्ति था। योरोप के बड़े-बड़े सेनाध्यक्ष उसे एक बहुत योग्य और रणकुशल सेनापति मानते थे। पर उसने अपनी शक्ति और सूझ-बूझ को अन्य फौजी अधिकारियों की तरह दूसरे देशवासियों को मारने, लूटने अथवा उनका राज्य हड़पने में नहीं लगाया, वरन् सदा जहाँ किसी पर अत्याचार, अन्याय होते देखा उसी की सहायता के लिये युद्ध में कूद पड़ा। वास्तव में यही सच्चे धर्मात्मा का लक्षण है, न कि दिन भर दूसरों की जेब काटने वाले और सुबह शाम मंदिर में जाकर घण्टा बजा आने वाले धर्मात्मा कहे जा सकते हैं। इसी दृष्टिकोण को सामने रखकर राधामोहनजी ने 'जोजेफ गेरीबाल्डी" के जीवन चरित्र में बड़े जोर के साथ लिखा है—

"यदि कोई प्रश्न करे कि क्या गेरीबाल्डी आस्तिक और धर्म प्राण था ? तो मैं दावे के साथ कहूँगा कि "हाँ, वह ईश्वर की सत्ता और उपासना, प्रार्थना में पूर्ण विश्वास रखने वाला, सत्यवादी, व सदाचारी वीर था। मनुष्य-भक्ति, देश-प्रेम, निष्काम-कर्मयोग उसके प्रमुख स्वाभाविक लक्षण थे।..... हमें गेरीवाल्डी के चरित्र से इस बात का उत्तम प्रमाण मिलता है कि परमात्मा किस प्रकार सत्यवादियों, त्यागियों को राह बतलाता है, उनकी रक्षा करता है, उन पर अपनी दया दिखलाता है।"

सच पूछा जाय तो आधुनिक युग में मैंजिनी और गेरीबाल्डी, की तुलना कृष्ण-अर्जुन से ही की जा सकती है। मैंजिनी ने आजन्म ब्रह्मचारी रहकर और एक महान तपस्वी के समान त्यागमय जीवन बिताकर पराधीन इटली देश को अत्याचारियों से मुक्त कराया। गेरीबाल्डी ने यद्यपि विवाह कर लिया, पर केवल इस उद्देश्य से कि उसे अपने परमार्थ-प्रयोजनों को पूरा करने के लिये एक सच्चा सहयोगी मिल जाय। और वास्तव में उसकी पत्नी "एनिटा" ऐसी ही सेवा व्रतधारी वीराङ्गना सिद्ध हुई। वह बड़े-बड़े युद्धों में गोले और गोलियों की वर्षा के बीच गेरीबाल्डी के कंधे से कंधा भिड़ा कर लड़ी और अन्त में उसने अपने प्राण स्वाधीनता के लिये जूझते हुये ही दिये। राधामोहनजी इन सच्चे वीरों पर मुग्ध थे और अपने ग्रन्थों में ही नहीं बातचीत और भाषणों में भी वे

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इनकी प्रशंसा करते अघाते नहीं थे। वे स्वयं भी इन्हीं आदर्शों से अनुप्राणित थे और जन्म भर इन्हीं के मार्ग पर चल कर विदेशी शासन से पीड़ित स्वदेश के उद्धार के लिये सर्वस्व की बाजी लगाते रहे।

पाखण्ड-खण्डन—

यह स्वाभाविक ही था कि इस प्रकार के बुद्धि और तर्क संगत मानव-धर्म का अनुयायी वर्तमान समय में भारतवर्ष में फैले हुये धर्म के विकृत रूप को देखकर उसके खण्डन में लग जाता। जब राधामोहनजी ने देखा कि स्वार्थी लोग प्राचीन धर्म के आध्यात्मिक आदर्शों का नाम लेकर हर तरह से अपना मतलब, अपनी हीन वासनाओं को पूरा करने में लगे हैं, तो वे ऐसे 'धर्म' के विरोधी हो गये। इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुये उन्होंने "धर्म और ईश्वर" नामक निबन्ध में लिखा—

'हमने देखा है कि लोग धर्म को नहीं मानते, पर अपने आपको और दूसरों को धोखा देते रहते हैं कि हम धर्म के बड़े पक्के मानने वाले हैं। धर्म के मामले में हम मुक्त कण्ठ से कह सकते हैं कि लोग बड़े ही कपटी, कुटिल और चतुराई से अनाचार करने वाले होते हैं। बड़े-बड़े पंडित या दार्शनिक शब्दों और वाक्यों का मनमाना अर्थ खींच-तान कर लगा लेते हैं यहाँ तक कि मूल धर्म का नाम निशान तक बाकी नहीं रहता। ईश्वर का ऐसा अनिश्चित और कल्पित अर्थ कर देते हैं जो बुद्धि के बाहर होता है।"

अब यह मालूम हो गया कि धर्म के ठेकेदार कहलाने वाले हृदय से न तो ईश्वर को मानते हैं और न धर्म के नियमों का पालन करते हैं, वरन् उनका मुख्य उद्देश्य धर्म के नाम पर अनजान और गरीब लोगों को बहका कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना होता है। इससे राधामोहन जी के विचार बहुत कुछ बदल गये और वे इस पाखण्ड का खण्डन करके जनता के उद्धार के समयानुकूल उपाय पर विचार करने लगे। अन्त में वे इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि जब तक लोगों को इस दिखावटी धर्म के जाल से निकाल कर उनको जीवन की वास्तविकता से परिचित न कराया जायगा तब तक परिस्थिति का सुधार नहीं हो सकता। इसके लिये वर्तमान दशा पर गम्भीर विचार करने पर साम्यवाद ही

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सब से अधिक कारगर उपाय जान पड़ा। उन्होंने देखा कि धर्म के नाम पर अधिकाधिक फायदा उठाने वाले धनवान लोग ही हैं और ऐसा ही कोई बहाना बना कर गरीबों को ठगा जाता है। इस विचार को स्पष्ट करते हुये उन्होंने अपनी "कम्यूनिज्म क्या है?" नामक पुस्तक में एक स्थान पर लिखा था—

"अत्याचारियों के हाथ में 'धर्म' एक ऐसा कारण-साधन है जिससे जनता में विषमता स्थापित होती चली जाती है। यह मनुष्यों में समता को नहीं रहने देता। इसके द्वारा धनिक, विद्वान् और राजवर्गीय व्यक्ति (शासकगण) अपना स्वार्थ सिद्ध करते हैं। श्रमिकों (मजदूरों) में इसी के द्वारा गुलामी की आदत कायम रखी जाती है। धर्म के बहाने लोगों को अनहोनी बातों पर—चमत्कारों पर विश्वास दिला कर मनुष्यों के अज्ञान को चिरस्थायी बनाया जाता है। इस तरह छल से चालाक लोग अपना काम बनाते हैं और श्रमिक; नादान और बे-पढ़े लुटते हैं। बड़े-बड़े महन्त पोप. पण्डे, पुजारी, मौलवी, मुल्ले इसी अज्ञान की बदौलत मजे उड़ाते हैं। वे धनियों की शासन सत्ता को कायम रखते हैं और गरीब लोग बराबर लुटा करते हैं।"

धर्म के नाम पर किये जाने वाले इस छल से राधामोहनजी बहुत असन्तुष्ट होते थे और इस कारण जब कभी अवसर आता था तो धर्म को विकृत करने वाले पंडित, पुरोहित, पुजारी, महन्त आदि की बहुत कड़े शब्दों में आलोचना किया करते थे। वास्तव में वे धर्म के विरुद्ध नहीं थे, उनका आशय धर्म के नाम पर किये जाने वाले ढोंग और पाखण्ड से ही था। अन्यथा धर्म को वे भी मानव-समाज को नियंत्रित रखने के लिये आवश्यक मानते थे। वे भी समझते थे कि यदि अधिकांश लोग अधर्मी और उच्छृंखल हो जायें तो देश और जाति का अकल्याण ही होगा। पर वे उसी धर्म को स्वीकार कर सकते थे जो न्याय और समझदारी पर आधारित हो। वे इस प्रकार के धर्म पर सब का समान अधिकार मानते थे और कहते थे कि सभी मनुष्यों को ऐसे धर्म के पालन में स्वतंत्रता होनी चाहिये। इसका स्पष्टीकरण करते हुये उन्होंने "नीति दर्शन" (दूसरा खण्ड) में लिखा था—

"मनुष्य स्वेच्छानुसार स्वतन्त्रतापूर्वक ईश्वरोपासना अपने सुख-साधन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के निमित्त अपने प्रकाश के आधार पर कर सकता है, परन्तु उसका कोई कार्य समाज के लिये हानिकर नहीं होना चाहिये। उसे अधिकार है कि वह चाहे जितने लोगों को साथ लेकर जिस रीति से चाहे ईश्वर प्रार्थना आदि करे। अथवा अपने मत (धर्म सिद्धान्त) को स्वतन्त्रतापूर्वक दूसरों को भी सुख देने के उद्देश्य से सिखावे, सुनाये और बतलाये। लेकिन वह अन्य लोगों की भी ऐसी ही स्वतंत्रता में बाधक न हो और अन्तःकरण में सच्चा और शुद्ध भाव रखे।

"समाज (कुछ व्यक्ति या कोई समुदाय) इस स्वतन्त्रता पर इस प्रकार आघात करते हैं कि वे अन्य मत को बलपूर्वक रोकने या प्रचलित करने लग जाते हैं, जैसा कि पहले समय में मुसलमानों ने किया था। अथवा वे अपने सम्प्रदाय की विशेष रूप से सहायता करते हैं और दूसरों के कष्ट और बाधाओं को देखकर चुप रह जाते हैं, जैसा अँगरेजी शासन में ईसाइयों के साथ किया जाता था।"

मानवीय प्रगति का शत्रु अन्ध-विश्वास—

हमारे धर्म-शास्त्रों में श्रद्धा और निष्ठा को बहुत ऊँचा स्थान दिया गया है। ये दोनों तत्व ही सफलता के मुख्य आधार होते हैं, विशेषतः आध्यात्मिक क्षेत्र में। शास्त्रों में कहा है कि आन्तरिक दृढ़ श्रद्धा के बल पर ही मनुष्य निराकार परमात्मा को साकार बना लेता है और पत्थर की प्रतिमा को चैतन्य कर सकता है। हम इन बातों को एकदम असत्य नहीं कहते, प्राचीन काल से आज तक अनेक व्यक्तियों का इन्हीं विशेषताओं के आधार पर काया-कल्प हो चुका है। हम कबीर, मीरा, तुलसी, सूर आदि की आध्यात्मिक शक्ति के विषय में जो कुछ चमत्कारिक बातें सुनते हैं उनमें से यदि कुछ सत्य हैं, तो उन सब का मूल उनकी श्रद्धा और निष्ठा ही थी। अन्य सब बातों को छोड़ भी दें तो उन्होंने बिना पढ़े लिखे अथवा ऊँची शिक्षा प्राप्त किये ऐसी अमर रचनायें प्रस्तुत करदीं यही क्या कम चमत्कार है ?

पर हमको वर्तमान दशा को देखकर यह खेदपूर्वक कहना पड़ता है कि इस अपूर्व शक्ति से जन-समाज का जितना उपकार हुआ है, अपकार भी उससे कम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नहीं हुआ। स्वार्थी और मतलब परस्त सब स्थानों और सब कालों में होते हैं। वे जहाँ कहीं कमाने खाने का कुछ–डौल—रास्ता देखते हैं तो तुरन्त ही घुस-पैठ आरम्भ कर देते हैं। जब कि उच्च श्रेणी के व्यक्ति पुण्य-परमार्थ के कामों की तरफ ध्यान देते हैं, ये हरफनमौला व्यक्ति खाने-कमाने का कोई तरीका निकाल लेते हैं। वे भी श्रद्धा से ही काम लेते हैं, पर अशिक्षितों और मन्द बुद्धि वालों को बहका कर सही के बजाय गलत रास्ते पर डाल देते हैं। इससे सत्य-धर्म की वृद्धि होने के बजाय धार्मिक ढोंग, पाखण्ड और ठगी का प्रसार ही अधिक होता है। राधामोहन जी इस प्रकार की धार्मिक ठगी के बहुत विरुद्ध थे और जब कभी कलम उठाते थे, तो ऐसे रँगे सियारों का पर्दा फाश कर देते थे। ऐसे अन्ध विश्वास पर प्रहार करते हुये उन्होंने अपने एक निबन्ध में लिखा था—

"चमत्कार क्या है ? इसका उत्तर सिवा इसके और कुछ नहीं हो सकता कि चमत्कार, करामात या 'मोजजा' वह है जिसका किसी प्राकृतिक (यथार्थ) बात से कुछ भी सम्पर्क न हो, तर्क, ज्ञान, बुद्धि, और कार्य-कारण सम्बन्ध का जिसमें दखल न हो और प्रकृति का बनाबटी स्वामी जो जी चाहे झट कर डाले। ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती दीवार पर सवार होकर कहने लगे 'दीवार चल' और दीवार चल पड़ी ! कमाल खाँ हाथी पर बैठे-बैठे हाथी सहित कुँए में समा गये और चैन से रहने लगे ! अमुक महाशय ने चाँद की ओर उँगली उठा करके हिलाई और चाँद फट कर दो टुकड़े हो गया ! अमुक पीर साहब या सन्त महाराज ने दाँतुन करके फाड़ी और जमीन में गाड़ दी, उसी से बड़ा छायाप्रद नीम का पेड़ खड़ा हो गया ! अमुक महाशय ने बच्चे को पेट में ही सारी विद्या पढ़ा दी ! अमुक स्त्री की नाक से ही बेटा पैदा हो गया ! अमुक हजरत का कलेजा फाड़ कर फरिश्तों ने दिल निकाल लिया और पानी से धोकर जहाँ का तहाँ रख दिया और वे तुरन्त वहाँ से चल दिये ! इसी तरह के हजारों गपोड़े विभिन्न धर्मों की प्राचीन पुस्तकों में भरे पड़े हैं और आजकल भी बहुत से मादान इन बातों को बड़ी भक्ति और प्रेम से सुनते हैं और उन्हें अक्षरशः सत्य मान कर सिर हिलाते जाते हैं।".

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पुराने ग्रन्थोंमें इस प्रकार की जो तरह-तरह की चित्र-विचित्र कथाएँ पाई जाती हैं सम्भव है किसी समय वे विशेष उद्देश्य से लिखी गई हों। अथवा कुछ कथाओं को जान बूझ कर अलङ्कारिक भाषा में लिखा गया हो, जिससे कम पढ़े या अनपढ़ लोग उन्हें सुन और समझ सकें। कुछ भी हो इसका नतीजा हानिकारक ही निकला। जब लोगों को एक परमात्मा की जगह तीन या तेतीस देवता मानने की शिक्षा दी गई, तो फिर रास्ता खुल गया और उनकी संख्या निरन्तर बढ़ती चली गई। शास्त्रीय देवताओं की पूजा तो ब्राह्मण पंडित कराते थे और सदैव बड़ी-बड़ी दक्षिणाएँ प्राप्त करते थे। यह देख कर अन्य "छुट-भैयों" का भी जी ललचाया और उन्होंने नये-नये देवता बनाकर अपढ़ जनता पर ऐसा जादू चलाया कि अनेक ऐसे देवताओं की पूजा होने लगी जिनका दो-चार सौ वर्ष पहले नाम भी सुनने में नहीं आता था। राधामोहन जी ने इसका वर्णन बड़े मार्मिक रूप में किया है—

"इन देवताओं, फरिश्तों और मुअक्कलों का जप भी किया जाता है, इनके नाम से गण्डे, तावीज बनाकर दिये जाते हैं। माला जपने, उपवास करने, एक समय खाने, या किसी दिन किसी विशेष पदार्थ को खाने या त्याग देने से यह देवता प्रसन्न हो जाते हैं! इसके विपरीत आचरण करने से वे अगर अप्रसन्न नहीं होते तो उदासीन अवश्य रहते हैं। कोई देवता गुड़ के पुए से राजी होता है, कोई चने की दाल से, कोई जौ की रोटी से, कोई तेल में पके उड़द के पकौड़ों से, कोई मद्य से और मांस से! कहाँ तक गिनाया जाय इन देवताओं की लीलाओं, इनके खान-पान के पदार्थों, इनके पसन्द के रंगों और कपड़ों, तथा इनकी अनुकूल क्रीडा-भूमियों के वर्णन से सैकड़ों पुस्तकें भरी पड़ी हैं। आप "या बुद्धू" सिद्ध करने जायें तो किसी मौलवी साहब से पूछिये कि क्या करना लाजिम है। आपको दुर्गा या यक्षिणी सिद्ध करनी है तो ओझा जी की शागिर्दी करें। यदि "एवरा का डेवरा" यंत्र भरना हो तो रोमन कैथलिक पादरी के शिष्य बनें। ऐसे अगणित 'मुअक्कल' और देव देवियों की भरमार है। मेरे पास न इतना समय है न इतना स्थान है, न इतना साहस है कि इन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हजारों-लाखों देव-देवियों की पूरी दास्तान पाठकों की भेंट करूँ। 'थोड़हिं मां जनहँहि सयाने।"

वास्तव में यह अन्ध विश्वास हमारी सामाजिक प्रगति में एक बहुत बड़ी बाधा है। इन झूँठे झगड़ों में फँसे रहने से हमारा ध्यान उच्च कोटि के कार्यों की तरफ कैसे जा सकता है? जाहरपीर, सन्तोषी माता, जखैया, कुआ वाला आदि को ही सर्व शक्तिमान् मानने वालों से हम कैसे यह आशा कर सकते हैं, कि वे अध्यात्म को समझेंगे और उस पर चल कर कुछ सच्चा परमार्थ और आत्म कल्याण कर सकेंगे। कैसे आश्चर्य की बात है कि राम, कृष्ण, शिव, हनुमान जैसे उद्दात्त आदर्श उपस्थित करने वाले देवताओं से हमारा मन नहीं भरा और हम विधर्म्मियों और भ्रष्टाचारियों के बनाये मनगढन्त देवी देवताओं को पूजने के लिये दौड़ते रहते हैं। ये पूजने वाले तो तरह-तरह से ठगे ही जाते हैं और हानि उठाते हैं पर इनके कारण हिन्दू-धर्म व्यर्थ में बद-नाम होता है और विरोधियों को उस पर आक्षेप करने का मौका मिलता है।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते"—

धार्मिक अन्ध विश्वास की तरह राधामोहन जी समाज में प्रचलित हानिकारक रूढ़ियों तथा अन्ध परम्पराओं के भी कट्टर विरोधी थे। जैसा हम पीछे लिख चुके हैं, आज से ७५ वर्ष पहले (सन् १८९४ में) अपनी स्त्री के मर जाने पर उन्होंने परिवार वालों के सामने यह माँग उपस्थित की थी कि अब अगर मेरा विवाह करना चाहते हो तो मैं विधवा के साथ ही करूँगा। उनकी इस माँग के पीछे स्त्री जाति की दुर्दशा को मिटाने की भावना ही काम कर रही थी। आज जमाने के बहुत बदल जाने, देश के सर्वोच्च शासनकर्ता के पद पर एक महिला की नियुक्ति की जाने पर भी स्त्री-जाति की अवस्था सन्तोष-जनक नहीं है। तब पौन शताब्दी पूर्व, जबकि स्त्री को खुले आम "पैर की जूती" कहा जाता था, और विधवा होते ही उसे "अभागी" "चुड़ैल" "डायन" की पदवी दी जाने लगती थी, स्त्रियों की दशा कैसी दयनीय होगी इसकी कल्पना सहज में ही की जा सकती है। राधामोहन जी का हृदय आरम्भिक आयु से ही इन असहाय नारियों को देखकर व्यथित होता था, इसलिये उन्होंने सदैव उनका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पक्ष लिया और उचित अधिकार दिये जाने की आवाज उठाई। वे स्त्री जाति को कितना गौरवान्वित मानते थे इसका पता उनकी अनेक रचनाओं से मिलता है। "मातृशक्ति" शीर्षक लेख में उन्होंने कहा है—

"संसार के विश्वस्त इतिहास के जन्म-काल से आज पर्यन्त के मनुष्य-जीवन और मानव समाज की आलोचना करने बैठें तो हमें हाथ उठाकर जोर के साथ यही कहना पड़ेगा कि 'मातृ शक्ति' ही मनुष्यों को उच्च बनाने वाली महाशक्ति है। आर्य-नीतिकारों ने अनेक स्थलों पर स्पष्ट कहा है कि माता का ऋण मनुष्य कभी भी नहीं चुका सकता। ईरान के सुप्रसिद्ध शेख सादी ने भी लिखा है—

आँ कुन कि रिजाय मादरानस्त।
फिरदौस जे़र कफे़ पाय मादरानस्त॥

अर्थात्—"वही काम करो जो माताओं की आज्ञानुसार हो, क्योंकि माताओं के पैर के तलुओं के नीचे स्वर्ग है।"

"मनुष्य जाति ने सदा माताओं की पूजा और प्रतिष्ठा की थी। भक्ति-पूर्वक मनुष्य ने आदिकाल से ही माताओं के आगे सर झुकाया है। पत्नी के रूप में स्त्री जहाँ सेवा करती रही है, वहाँ माता के रूप में वह शासन करती आई है। पत्नी आज्ञा मानने वाली होती है और माता आज्ञा देने वाली। सब कल्पों व युगों में माता ही धारण व पालन करने वाली, धर्म का रूपान्तर पाई जाती है। वही संरक्षिका और मनुष्य जाति की आदिम शिक्षिका है। मनुष्य जाति के ऐतिहासिक रंगमंच पर माता का अभिनय अत्यन्त स्मरणीय और महत्त्वपूर्ण पाया जाता है। माता के ही हाथ, सामाजिकता को आरम्भ करने वाले हाथ हैं। माता हमको पालने पर सुला कर हिलाते हुये सभ्यता के पथ पर अग्रसर करती है। सार यह कि माता ही सामाजिक सम्बन्धों की निर्मात्री शक्ति है, सामाजिकता की जन्मदात्री है।"

पर खेद है कि पुरुषों ने स्त्री जाति के इन असीम उपकारों और अनुदानों का महत्त्व न समझ कर उसकी कोमलता तथा स्नेहसिक्त प्रकृति का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अनुचित लाभ उठाया । उसको सब प्रकार से अशक्त और पराधीन बनाकर सब अधिकारों से वंचित कर दिया । आदिम अवस्था में स्त्रियों को परिवार में जो प्रकृतिदत्त प्रमुखता प्राप्त थी, सभ्यता की वृद्धि के साथ क्रमशः उसका अपहरण होता चला गया और पुरुष ने जहाँ तक बन पड़ा उसको तरह-तरह के सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक बन्धनों से जकड़ दिया । इस दूषित परिस्थिति की चर्चा करते हुये राधामोहन जी ने "स्त्री-मानस" शीर्षक निबन्ध में बतलाया था—

"मनुष्य-जाति के इतिहास से यह सिद्ध है कि पुरुषों ने स्त्रियों के साथ बहुत बुरे भेदभाव रखे हैं । नीति, धर्म, कानून रीति रिवाज, साहित्य और लोकमत में जहाँ देखें तहाँ पुरुषों की स्वार्थपरता और शरारत आँखों के सामने नाचती नजर आती है । अगर पुरुषों का स्त्रियों के साथ अत्याचार न होता आता, तो निस्सन्देह आज जगत जितना समुन्नत हुआ है उससे बीस गुणा अधिक सभ्य, समुन्नत और विकसित होता । पुरुषों ने अज्ञानवश यह समझ लिया कि मनुष्य-जाति के विकास का नर ही एक प्रधान कारण है, और नारी-अङ्ग का इस काम में कोई हाथ ही नहीं है । यहाँ तक कि वह है ही नहीं, अगर है भी तो पुरुषों की दासता के लिये, न कि बराबरी और सहकारिता के लिये ।"

इस उद्धरण में जो कुछ कहा गया है उसकी सचाई में सन्देह की कुछ भी गुञ्जायश नहीं है । हिन्दू-धर्मशास्त्रों में प्राचीन लेखकों ने पतिव्रत की महिमा गाने में तो कलम तोड़ दी, स्त्री को जन्म से ही "मन-वचन-कर्म" से पुरुष की दासी रहने की शिक्षा दी, पर पत्नीव्रत का उल्लेख शायद ही कहीं दबी जबान से किया हो । वे उसका प्रतिपादन करते भी कैसे ? जब समाज के कर्णधार सभी राजा महाराजाओं के यहाँ कई-कई रानियाँ ही नहीं, सैकड़ों सेविकायें भी रहती थीं, जिनसे वे स्वेच्छानुसार व्यवहार करने का अधिकार रखते थे । प्रसन्न होने पर पत्नी को आकाश पर चढ़ा देना और नाराज हो जाने पर मिट्टी में मिला देना, उनके बाँयें हाथ का काम था । "यथा राजा तथा प्रजा" की कहावत के अनुसार सर्वसाधारण में भी यही प्रवृत्ति बढ़ती गई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और हजार वर्ष पूर्व के इतिहास में हम देखते हैं कि स्त्री को पूर्ण रूप से एक प्रकार की जड़ सम्पत्ति की तरह मान लिया गया, जिसको लड़ कर, छीन कर, खरीद कर किसी भी तरह प्राप्त किया जा सकता था, और फिर उसके साथ वैसा ही व्यवहार भी किया जाता था।

पर जैसा राधामोहन जी ने बतलाया है इस प्रकार समाज के आधे अङ्ग—नारी को सब प्रकार से आश्रित और बन्धनग्रस्त बनाने से पुरुष का कोई वास्तविक लाभ नहीं हुआ, वरन् अशिक्षित और अविकसित नारी, समाज के पैरों में भारी बेडियों के समान सिद्ध हुई और इससे उसकी प्रगति में बहुत बड़ी बाधा उपस्थित हो गई। उनका यह कथन सर्वथा सत्य है कि यदि नारी भी पूर्ण अधिकार प्राप्त और विकसित होती तो हमारा समाज आज की अपेक्षा बीस गुना अधिक उन्नत अवस्था में होता है। जब हमने माताओं को ही सब तरह से पिछड़ा हुआ और मूढ़ता-ग्रस्त बना दिया तो उनसे उत्पन्न और उनके द्वारा पालन की गई सन्तान कैसे दोष रहित; उत्कृष्ट और आदश हो सकती है? इस कारण पुरुष भी बाल्यावस्था से ही अनेक दोषों और त्रुटियों से ग्रस्त होते रहे जो समाज की प्रगति में आजीवन रोड़ा अटकाते रहे।

समाज की इस अवांछनीय स्थिति को राधा मोहन जी बहुत अच्छी तरह समझते थे। और उन्होंने स्त्री शिक्षा को बढ़ाने की सदैव पूरी चेष्टा की। वे नारी—स्वातंत्र्य के बहुत बड़े समर्थक थे और कितनी ही प्रगतिशील स्वभाव की महिलाओं को उन्होंने व्यक्तिगत रूप से सामाजिक और शिक्षा के क्षेत्र में अधिक से अधिक अग्रसर होने का प्रोत्साहन दिया। वे सदैव यह कहते रहते थे कि यदि हम वास्तविक स्वाधीनता तथा स्वराज्य का अधिकार चाहते हैं तो हमें पहले देश की स्त्रियों को शिक्षित और उच्च बनाना होगा। इस कार्य में हमको विदेशों की नकल करने की जरूरत नहीं जहाँ स्त्रियाँ उचित से अधिक स्वच्छन्द हो जाती हैं। हमारे लिए अपना वैदिक आदर्श ही पर्याप्त और हितकर है। उस समय शील और पतिव्रत धर्म का पालन करते हुए

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भी स्त्रियाँ सामाजिक प्रगति के सब कार्यों में पूरा भाग लेती थीं और उसके लिये सब तरह से योग्य होती थीं। यही स्थिति आज भी हमारे लिए हितकारी है।

समाज-सङ्गठन के क्षेत्र में—

राधामोहन जी समाज की सर्वाङ्गीण उन्नति के लिये प्रयत्नशील थे। स्त्रियों की पराधीनता की तरह भारतीय-समाज के पिछड़ी हालत में रहने का एक अन्य कारण उसमें हजारों जातियों और उपजातियों का होना और परस्पर एक दूसरे को ऊँचा-नीचा समझना भी है। इस भयंकर जाति-भेद ने हिन्दू-समाज को जितना निर्बल बनाया है और करोड़ों व्यक्तियों को विधर्मियों के क्षेत्र में ढकेला है; उसे देखकर और समझ कर वे बहुत खेद करते थे। यद्यपि वे बड़े स्वतन्त्र विचारों के थे, पर देशोन्नति के लिए जातीयता तथा प्राचीन संस्कृति की रक्षा को परमावश्यक मानते थे। अपनी हिन्दू-सङ्गठन की मनोवृत्ति का परिचय उन्होंने सन् १९०४ में ही दिया था, जब परिवार तथा जाति वालों के विरोध की चिन्ता न करके आर्य समाज द्वारा शुद्ध किये किसी व्यक्ति द्वारा बाँटी मिठाई खाली थी। उस समय यह कार्य भी बड़े साहस का समझा जाता था।

इसके पश्चात् सन् १९२२–२३ में जब देश में साम्प्रदायिक वैमनस्य बढ़ा तब भी उन्होंने उसमें सक्रिय भाग लिया और कोहाट के दंगे में हिन्दुओं पर घोर अत्याचार होने पर वे श्री जुगलकिशोर बिरला के सहयोग से पीड़ितों की सहायता करने वहाँ पहुँचे थे और कितने ही निराश्रित व्यक्तियों की रक्षा की थी। उस समय कांग्रेस का कार्य पारस्परिक मतभेद के कारण शिथिल पड़ गया, इसलिए राधामोहन जी हिन्दू-सभा के सहयोग से हिन्दू-संगठन का कार्य करने लगे। इस सम्बन्ध में उन्होंने सन् १९३० में लिखे गये एक लेख में स्वयम् बताया था—

"मुझे कांग्रेस की नीति प्रारम्भ से आज तक पसन्द नहीं है फिर भी मैंने न कांग्रेस का विरोध किया न अब करता हूँ। अवांछनीय स्वराजिस्टों

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

के अधिकार काल में मैं हिन्दू-सभा के सम्पर्क में रह कर कई साल तक काम करता रहा। साथ ही हिन्दू-संगठन का प्रयत्न भी किया। यद्यपि रूढ़िवादी धर्म से मुझे कुछ भी प्रेम नहीं पर हिन्दू संस्कृति और हिन्दू जाति की रक्षा के लिये प्राण विसर्जन करने को मैं सदैव अपना कर्तव्य समझता हूँ।"

राधामोहन जी ने कांग्रेस के सम्बन्ध में अपने जो मनोभाव व्यक्त किये हैं उसका कारण यही है कि आरम्भ के वर्षों में तो यह केवल एक प्रार्थना करने वाली संस्था थी। यदि उसकी किसी बात को सरकार मान लेती तो वह बहुत सन्तुष्ट हो जाती थी, अन्यथा फिर वैसे ही प्रस्ताव पास करती रहती थी। उसके पश्चात् जब यह गाँधी जी के प्रभाव में आई तो उन्होंने अन्य बातों के साथ ही "अहिंसा" को उसका मुख्य नियम बना दिया। पर राधामोहन जी जैसे व्यक्तियों की मान्यता थी कि अहिंसा को इतना अधिक मान कर हम देश को कभी पूर्ण स्वाधीन नहीं बना सकते। इसी से वे कांग्रेस के पूर्ण अनुयायी कभी न बन सके। इस विषय में इन पंक्तियों के लेखक का विचार भी राधामोहन जी से मिलता-जुलता था; जिसके कारण वह गाँधी जी के आश्रम में वर्ष भर तक रहकर भी वहाँ की नीति से सहमत न हो सका। इसी कारणवश सन् १९२४–२५ में चुनाव के अवसर पर उसने राधामोहन जी के साथ एकाध मामले पर कांग्रेस का विरोध भी किया और सन् १९२५ के कानपुर कांग्रेस अधिवेशन के अवसर उसके कार्यकर्ताओं से संघर्ष भी हो गया। पर इन बातों का आधार कोई व्यक्तिगत कारण न होकर सिद्धान्त सम्बन्धी मतभेद ही था; इससे किसी कांग्रेस नेता या कार्यकर्ता से स्थायी वैमनस्य होनेकी नौबत नहीं आई। कुछ लोग राधामोहनजी के इस व्यवहार को परस्पर विरोधी मानकर उनकी आलोचना करते थे। पर मैं उनकी वास्तविक मनोवृत्ति को समझता था; इसलिए सन् १९५८ में भी 'दैनिक हिन्दुस्तान" (दिल्ली) में प्रकाशित अपने एक लेख में मैंने लिखा था—

"अनेक लोगों को यह बात कुछ विचित्र-सी जान पड़ेगी कि साम्यवादी और स्वतन्त्र विचारक होते हुए भी राधामोहन जी हिन्दू-सभा और हिन्दू-संग-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ठन का कार्य कैसे करते थे ?" वास्तव में हिन्दू-संस्कृति उनकी नसों में घुसी हुई थी और वह "हिन्दू" को एक जाति या सम्प्रदाय के रूप में नहीं वरन् एक राष्ट्र के रूप में देखते थे। प्रत्येक क्षेत्र में काम करते हुए उनको हिन्दू जाति की उन्नति और भलाई का ख्याल बना रहता था।

समाज और देश गुरुजनों से भी बढ़ कर हैं—

राधामोहन जी देश और समाज के इतने दृढ़ शुभचिन्तक थे कि इसके लिए सब कुछ त्याग करने को तैयार हो जाते थे। उदाहरणार्थ वे गुरुजनों का बड़ा आदर करते थे और बड़ी आयु के हो जाने पर भी माता-पिता के सम्मुख सदा नत-मस्तक रहते थे। पर जब उन्होंने इनका विधवा-विवाह का प्रस्ताव न मानकर कुँवारी लड़की से ही विवाह करने पर जोर दिया और इनको यह बात सर्वथा न्याय विरुद्ध जान पड़ी तो वे माता-पिता से झगड़ा करने के बजाय चुप-चाप घर छोड़ कर चल दिये। कोई धर्म संकट आ पड़ने पर गुरुजनों से किस प्रकार व्यवहार करना चाहिये; इस सम्बन्ध में इनका मत यह था—

"बालकों को अपने पितरों (पिता माता आदि) और गुरुजनों का आज्ञानुवर्ती होना चाहिए। क्योंकि ईश्वरीय इच्छा यही है। पर इसमें इतना ध्यान अवश्य रखे कि अपनी आत्मा का घात न हो, अर्थात् पितरों के कहने से वह काम जिसे हम प्रत्यक्ष वेद विरुद्ध विश्वास करते हैं न करें; जैसे हत्या, जुआ, चोरी। परमात्मा की आज्ञा माता, पिता, गुरु राजा आदि सब की आज्ञा से ऊपर और प्रधान है। यदि कोई बालक प्रश्न करे कि पितरों की आज्ञा मानना धर्म क्यों है ? तो इसका सीधासादा उत्तर यह है कि घर का तमाम संगठन खण्ड-खण्ड हो जाय यदि सन्तान आज्ञानुवर्तिनी न हो। ईश्वर और हमारा संगठन दोनों का यह उद्देश्य है कि हम पूर्व की बुद्धि-विद्या और अनुभव से लाभ उठावें। वेद भगवान आज्ञा देते हैं—मातृवान, पितृवान आचार्यवान पुरुषों वेद अर्थात् माता पिता गुरु तीन उत्तम शिक्षक हों तब ही मनुष्य ज्ञानवान हो सकता है। (यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। पुनः तैत्तिरीय पृ० ७ अनु०

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

११ क० २ में कहा है— मातृदेवो भव, पितृदेवो भव आचार्यदेवो भव।" (नीति दर्शन—दूसरा खण्ड)

वेद भगवान् (शब्द ब्रह्म) ने माता-पिता तथा आचार्य के महत्व के सम्बन्ध में जो कुछ कहा है वह निर्विवाद है। जिनके द्वारा हमारे शरीर, मन और प्राण का निर्माण हुआ; जिनके प्रसाद से हम विकास की वर्तमान मंजिल तक पहुँच सके हैं, उनका हार्दिक समान और आवश्यक सेवा-सुश्रूषा करना हमारा 'धर्म' माना ही जायगा। इस लिए उनके आदेशों का पालन करना भी हमारा पवित्र कर्तव्य है। पर इसमें इतना ध्यान रखना आवश्यक है कि यदि वे भ्रम, स्वार्थ या मानुषी दुर्बलता के कारण कोई ऐसा आदेश दें जो— नैतिकता, ईमानदारी, परोपकार, परमार्थ आदि मानवीय सद्गुणों के विपरीत हो तो उसको अमान्य भी किया जाना चाहिए। ऐसे अवसर पर उनको देश-काल की वर्तमान परिस्थिति तथा उनकी भूल विनय पूर्वक समझा देनी चाहिए। साथ ही किसी प्रकार उनकी सेवा सहायता में त्रुटि नहीं आने देना चाहिए।

इसका एक प्रत्यक्ष और बहुत प्रभावशाली उदाहरण हमको अपने युग-निर्माण आन्दोलन में मिलता है। आजकल युग-निर्माण योजना की तरफ से दहेज-प्रथा विरोधी अभियान चलाया जा रहा है और कालेज, स्कूलों में पढ़ने वाले छात्रों को प्रेरणा देकर यह प्रतिज्ञा कराई जा रही है कि वे अपना विवाह दहेज-प्रथा को त्याग कर करायें, क्योंकि यह प्रथा समाज का घोर अहित कर रही है। लड़के इन युक्ति-युक्त बातों को समझ जाते हैं और दहेज त्यागने की प्रतिज्ञा कर लेते हैं। पर विवाह का अवसर आने पर उनके अभिभावक धन के लालच अथवा अपनी शान और बड़प्पन के नाम पर इसके लिये तैयार नहीं होते। ऐसी परिस्थिति सामने आने पर प्रत्येक विवेकशील और न्यायपरायण युवक का यह कर्तव्य है कि दहेज वाले विवाह के लिए स्पष्ट इनकार करदे इससे भले ही माता पिता या अन्य सम्बन्धी रुष्ट ही क्यों न हो जायें। इसी प्रकार समाज-सेवा और देश-सेवा के और भी कितने ही कार्य ऐसे आ जाते हैं जिन्हें पुराने लोग अपने स्वार्थ की दृष्टि से हानिकर समझ कर उनमें भाग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

न लेने का आदेश देते हैं । इस प्रकार की आज्ञाओं को यदि न माना जाय तो यह एक उच्च कर्तव्य-पालन ही समझा जायगा । राधामोहन जी के कथन का यही आशय है ।

राजनैतिक क्षेत्र में अग्रगामी—

यों भारतीय राजनीति की दृष्टि से राधामोहन जी गर्म दल के अनुयायी समझे जाते थे और विदेशियों की अधीनता से देश को मुक्त कराने के क्रान्तिकारी आन्दोलन में भी कई प्रकार से सहयोग देते रहते थे । असहयोग का जोर बढ़ने पर उन्होंने नागपुर के असहयोग आश्रम रह कर कांग्रेस का साथ दिया और उसके लिये कई बार जेल गये । हिन्दू-सङ्गठन की आवश्यकता उपस्थित होने पर उसके लिये भी काफी परिश्रम और दौड़धूप करते रहे । क्रांतिकारी दल वालों को धन तथा हथियारों की सहायता दिलाने के लिये सन् १९०८–९ से ही तरह-तरह के गुप्त प्रयत्न करते रहे । ये सब कार्य देश की सामयिक परिस्थिति और आवश्यकता के अनुसार वे करते अवश्य रहे, पर उनका हार्दिक विश्वास और आन्तरिक सिद्धान्त इन बातों से बहुत आगे बढ़ा-चढ़ा था । वे उन दार्शनिकों के मतानुयायी थे जो जाति और सम्प्रदाय की सीमा को ही नहीं वरन् राष्ट्रीयता की परिधि को भी हटा कर "एक मानव जाति" के सिद्धान्त को मान्यता प्रदान करते हैं ।

इस समय हम साम्यवाद या कम्यूनिज्म को सबसे अधिक अग्रगामी राजनीतिक सिद्धान्त समझते हैं । भारत के बड़े-बड़े राजनीतिक नेता भी उसकी चर्चा दबी जबान से करते हैं और पूँजीवाद पर भरोसा रखने वाले तो उसके नाम से ही थरथराते हैं । पर राधामोहन जी योरोप के प्रसिद्ध आन्दोलनकारी "बकुनिन" के उस सिद्धान्त को सर्वोपरि मानते थे जिसको "अनार्किज्म" या "अराजकतावाद" के नाम से पुकारा जाता है । उसका आशय है कि सब प्रकार के शासन और राज्य-व्यवस्थायें कृत्रिम हैं और मनुष्यों को दबा कर रखने के उद्देश्य से बनाई गई हैं । इनके रहते मनुष्य न तो सुखी हो सकता है और न मानवता की सर्वोच्च चोटी पर पहुँच सकता है । इसलिये मानव जाति का सच्चा हितैषी वही है जो इन शासन-व्यवस्थाओं का अन्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

करके सर्वथा बन्धन रहित समाज की स्थापना के लिये प्रयत्न करता है इसी स्थिति में मनुष्य का उचित विकास हो सकता है। अधिकांश लोगों के लिये यह एक विचित्र और समझ में न आने वाला सिद्धान्त था, क्योंकि अब से सौ वर्ष पूर्व एक तरफ तो इसके अनुयायी राज्य-व्यवस्था को मिटाने के उद्देश्य से योरोप के राजाओं और सम्राटों के प्राण नाश के लिये बम और पिस्तौलों का प्रयोग करने लगे थे और दूसरी तरफ वह जन-समाज के लिये उस स्थिति का प्रचार और समर्थन करते थे जिसको हम भारतीय धर्मग्रन्थों की भाषा में "सतयुग" कह सकते हैं। ये 'अनार्किस्ट" गरीबों की दुर्दशा देखकर आपे से बाहर हो जाते थे और अपना कोई स्वार्थ न होने पर भी अत्याचारी शासकों के प्राण लेने और अपने प्राण देने के लिये तैयार हो जाते थे। ऐसे ही लोगों के लिये किसी साहित्यकार ने कहा है कि वे एक साथ "फूल से भी कोमल और वज्र से भी कठोर" होते हैं। इस सिद्धान्त का विवेचन करते हुये राधा-मोहन जी ने "न्याय नीति समता और स्वातंत्र्य" शीर्षक लेख में कहा है—

"योरोप के महान् स्वतन्त्र विचारक ब्राउढन का कथन है कि 'तुम जो कुछ जानते हो उसे बिना किसी प्रकार के भय और घृणा के सत्य-सत्य कह दो।' कवियों और कथाकारों की कल्पनायें मनोरंजन तो कर सकती हैं पर वह विश्वास का स्थान ग्रहण नहीं कर सकतीं। विज्ञान, मानव-धर्म और प्राकृत-नियम कहते हैं कि उनके आगे कला-कौशल के अतिरंजन और कविता की मनगढन्त कल्पनाओं को स्थान नहीं मिल सकता। सचाई के प्रकट होने का स्थान प्रत्येक मनुष्य का हृदय है। इसमें रंग-रूप, देश, धर्म और जाति के कारण कोई अन्तर नहीं पड़ सकता। हम अनन्त के मध्य में है, हमसे पहले भी अनन्त और पीछे भी अनन्त का स्थान है। इस अनन्त में किसी क्षणिक प्राणी की क्या हस्ती है? इसलिये मेरे छोटेपन को भूल जाओ। यह देखो कि मैं जो कहता हूँ वह कहाँ तक सत्य है? यह विचार करो कि सत्व और दायित्व क्या हैं? न्याय नीति किसे कहते हैं? स्वातंत्र्य तथा स्वाधीनता का रूप कैसा है?

"विद्वान् लोग कहते हैं कि मनुष्य भी एक प्रकार का पशु ही है, पर दोनों में अन्तर यह है कि मनुष्य अपनी सामाजिक योग्यता को समझता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वह जानता रहता है कि मुझ में समाज सङ्गठन की योग्यता है लेकिन पशु इस गुण को रखते हुये भी अपनी इस विशेषता को नहीं जानता। हम अपनी सामाजिक बुद्धि से किये हुये कामों की आलोचना विचार एवं तर्क करते हैं। इसी से हमें ख्याल होता है कि कौन सा काम हमारे लिये और दूसरों के लिये हानिकर है। बहुत से काम पहले हमारे लिए हानिकर होते हैं, फिर दूसरों के लिये। बहुत से काम पहले दूसरों को हानि पहुँचाते हैं, फिर हमें। इसी लिये हम उस सामाजिक बुद्धि का जो हमें क्रम से चलाती है विरोध नहीं करते। इसी का नाम न्याय है। हमारी यह तर्क शक्ति ही हमें बतलाती है कि स्वार्थी, डाकू. या हत्यारा, अथवा यों कहें कि 'समाज-वंचक" व्यक्ति पापिष्ट है। जब मनुष्य जान-बूझकर दोष करता है, तो वह प्रकृति का शत्रु और समाज के समक्ष अक्षम्य अपराधी है। वह दूसरों के लिये भी हानिकर है और अपने लिये भी। अस्तु हमारे सामाजिक भाव—चाहे वे धर्म के नाम पर हों और चाहे कानून अथवा नीतिमत्ता के नाम पर–और हमारी तर्क शक्ति (बुद्धि) हमें इस बात के लिये सावधान करते हैं, कि अपने कर्मों की जिम्मेदारी अपने ऊपर लें। इसी सिद्धान्त पर बदला लेना, पश्चात्ताप, प्रायश्चित्त और दण्ड विधान बने हैं।

भारतीय धर्म-शास्त्र भी यही कहते हैं—

अराजकतावाद का सिद्धान्त यद्यपि आधुनिक युग में दो-चार योरोपियन विचारकों ने निकाला था, पर यदि गम्भीरता पूर्वक इसकी विवेचना की जाय तो यह स्पष्टतः हिन्दू धर्म शास्त्रों के सर्वोच्च आदेश "आत्मवत् सर्व भूतेषु" के अनुकूल ही है। जब कोई मनुष्य अपनी हानि के साथ ही दूसरे की भी हानिं की चिन्ता रखता है तभी वह विवेकयुक्त सामाजिक-प्राणी कहलाने का अधिकारी बनता है। आज मनुष्य ज्ञान—विज्ञान के क्षेत्र तो अदभुत चमत्कार दिखाने लग गया है. पर इस सामान्य सत्य सिद्धान्त को मानने में असमर्थ हो रहा है कि हम अपने हानि-लाभ के साथ दूसरों के हानि-लाभ का भी उतना ही ख्याल रखें। इसी सचाई को मानने का यह परिणाम है कि

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संसार भर में घोर संघर्ष उत्पन्न हो गया । सम्पत्ति के बढ़ते जाने और नये-नये सुख-साधनों के प्रस्तुत होते रहने पर भी मनुष्य सर्वनाश की विभीषिका से काँप रहा है । राधामोहन जी ने इस तथ्य को पूरी तरह समझ कर ही "कम्यूनिज्म क्या है ?" पुस्तक के आरम्भ में लिखा था—

"कौन नहीं जानता कि भूमण्डल के निवासी जन-समुदाय में सम्पन्नों (धनियों) की संख्या एक मुट्ठी भर है, शेष पृथ्वी विपन्नों के आर्तनाद से गूँज रही है । चारों ओर 'रोटी के झगड़े' की प्रचण्ड अग्नि मनुष्यत्व को भस्म किये डालती है । फिर जो थोड़े से सम्पन्न हैं उनमें भी विलासिता के लिये एक दूसरे का धन छीनने का प्रबल संघर्ष चल रहा है । इन सब बातों का स्पष्ट रूप-रङ्ग इस निबन्ध में देखने को मिलेगा । हमें तो भगवान व्यास का एक वचन याद आता है । यदि कम्यूनिज्म से उसकी पूर्ति होती हो तो अच्छा ही है ।

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम् ।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत् ॥

अर्थात्—धर्म का सार और तदनुसार मानवीय कर्तव्य यही है कि हमको स्वयं जो बात, जिस प्रकार का व्यवहार बुरा लगता है वैसा व्यवहार किसी अन्य के साथ भी नहीं करना चाहिये ।

"इसी बात को व्यास जी से अनुमानतः २५०० वर्ष पीछे महात्मा ईसा मसीह ने दुहराया था— Do unto others as you would they should do unto you" (अर्थात् अन्य लोगों के साथ वैसा ही व्यवहार करो जैसा तुम उनसे अपने लिये चाहते हो) । इन्हीं विचारों की रूह (सार) खींच कर एक योरोपियन राजनैतिक लेखक ने नई शीशी में भर कर इस तरह पेश किया है–

"जनता के लिये जन-राज्य के अतिरिक्त और जितनी भी तरह की सरकारें हैं और विशेषतया विदेशी-सरकार उनको वास्तव में डाकू और लुटेरों की सरकार ही समझना चाहिए ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इन बातों से पाठक समझ सकते हैं कि संसार भर के सत्य और न्याय के अनुयायी सज्जनों का एक ही मत है कि अपनी तरह दूसरे की पीड़ा को भी समझना चाहिए और उन तमाम कामों से बचना चाहिए जिससे दूसरो का अनिष्ट होता हो। इस दृष्टि से वर्तमान जगत में प्रचलित पूँजीवाद का सिद्धान्त साफ तौर पर प्राकृतिक नियम के विपरीत और अन्यायपूर्ण है। कहाँ तो शास्त्रकार और उनके साथ ही तरह-तरह के तिलक और मालाओं से सज्जित आचार्य' सन्त-महन्त आदि "एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति" अर्थात्—इस समस्त संसार में एक ही ब्रह्म व्याप्त है उसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। जैसे सर्वोच्च सिद्धान्त की घोषणा करते हैं, और कहाँ वे अपने ही समान ब्रह्म रूपी मनुष्यों—भूखों-नंगों को देख कर उनकी तरफ से आँखें फेर लेते हैं। इतना ही नहीं वरन् करोड़ों मनुष्यों को इस प्रकार कंगाल बनाने वाले धनकुबेरों करोड़पति सेठों को ये "धर्माचार्य" ही 'धर्म मूर्ति' 'धर्म दिवाकर' की पदवी भी दे डालते हैं। राधामोहन जी ने इस स्थिति को बहुत अच्छी तरह समझ लिया था और अपने "कानून तथा सरकार" शीर्षक निबन्ध में स्पष्ट रूप से कहा था—

"आज कल मनुष्य जाति में केवल दो ही प्रतिद्वन्दी दल रह गये हैं—एक सबल अधिकार प्राप्त जबर्दस्त लोगों का और दूसरा निर्बल जीवन अधिकार रहित सीधेसादे लोगों का। कानून, सरकार, धर्म-शास्त्र और पुरोहित (धर्म गुरु) केवल जबर्दस्तों के पृष्ठ पोषक होते हैं, दुखियों के नहीं—यह हमारा नित्यप्रति का अनुभव है।"

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि और न्याय का—धर्म का तत्व "आत्मवत् सर्व भूतेषु" की सूक्ति में ही समाया हुआ है। सच्चा धर्मात्मा कभी वर्तमान पूँजीपतियों के समान गरीब मजदूरों और स्वत्वहीन लोगों का शोषण न करेगा। लकीर के फकीर लोगों को भले ही मन्दिर और धर्मशाला बनाने वाले अथवा दो लाख रुपया खर्च करके बहुत धूमधाम के साथ ठाकुर जी को "छप्पन भोग" खिलाने वाले सेठजी "धर्म प्राण" अथवा "भक्त राज"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जान पड़ते हों, पर हम गुरु नानक के शब्दों में यही कह सकते हैं—

जानन हारा जानिया बाणिया तेरी बान ॥
अनछाने लोहू पियै पानी पींवै छान ॥

अर्थात्—अरे बनिया ! तेरे स्वभाव को कोई जानने वाला ही समझ सकता है । एक तरफ तो तू सूक्ष्म जीवों की रक्षा के नाम पर पानी को कपड़ा से छान कर पीता है और दूसरी तरफ गरीबों के खून को बिना छाने हुये ही गटक जाता है । (अर्थात् ब्याज भाड़े के नाम पर उनके कपड़े तक उतरवा लेता है)

राधामोहन जी इस तथ्य को बहुत अच्छी तरह समझते थे और उन्होंने अपनी रचनाओं में जगह-जगह गरीबों पर होने वाले सब तरह के अन्याय अत्याचारों का जोरों के साथ विरोध किया था । यह बात दूसरी है कि उस समय राज्य तथा समाज की गति-विधि सर्वथा प्रतिकूल होने और कोई उपयुक्त साधन प्राप्त न होने के कारण व्यावहारिक रूप में उनको भी अपने सार्वजनिक कार्यों के लिये कुछ उदार और सहृदय श्रेणी के "बनियों" की सहायता लेनी पड़ती थी ।

हम यह मानते हैं कि किसी भी श्रेणी या जाति के सब लोग एक से नहीं होते । अच्छे और बुरे सब में होते हैं । पुराने समय में बनियों में ही भामाशाह हुए जिन्होंने अपना सर्वस्व देकर महाराणा प्रताप की डूबती नैया को पार लगाया । वर्तमान समय में जमनालाल बजाज ने भी अपनी सम्पत्ति गाँधी जी के चरणों में अर्पित करके राष्ट्रीय-संग्राम की सफलता में अभूतपूर्व सहयोग दिया । काशी के श्री शिवप्रसाद गुप्त ने मालवीय जी तथा अन्य अनेक प्रसिद्ध देशभक्तों की सहायता करके उनके कार्यों को अग्रसर कराया । पर ऐसे उदाहरण इने-गिने ही हैं । अधिकांश संख्या गुरु नानक के अनुसार लालची श्रेणी के व्यवसाइयों की ही दिखाई पड़ती है, जो धन कमाने के लिये अनैतिक कार्यों में भी संकोच नहीं करते । ऐसे व्यक्तियों के भ्रष्टाचार—खाद्य पदार्थों में दूषित वस्तुएँ मिला देने की शिकायतें, हम प्रतिदिन सुनते रहते हैं ।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इसी लिये राधामोहन जी तथा उनके जैसे विचार वालों (अर्थात् समान अधिकार और सार्वजनिक न्याय के अनुयाइयों) को उक्त श्रेणी वालों का विरोध करना पड़ता है ।

कांग्रेस और सार्वजनिक आन्दोलनों में—

इस प्रकार मनुष्य मात्र को समान अधिकार और सामजिक न्याय के महान् सिद्धान्त को लेकर राधामोहन जी देशसेवा और अन्याय पीड़ितों के सेवा-कार्य में आगे बढ़ते गये सन् १९०५–६ से ही उन्होंने स्वदेशी और बहिष्कार आन्दोलन में भाग लेना आरम्भ किया । सन् १९०७ में सूरत कांग्रेस में गर्म और नर्म दल के झगड़े में पूरी तरह लोकमान्य तिलक और अरविन्द घोष के अनुयायी थे । इसके बाद ही उनका सम्बन्ध बङ्गाली क्रांतिकारियों से हो गया । राधामोहन जी का परिचय अनेक मारवाड़ी व्यवसाइयों से था, इस लिये वे समय-समय पर उनको आर्थिक सहायता दिलाने में प्रयत्नशील रहते थे । पर इस सम्बन्ध में उनसे हमारी कभी विशेष बातचीत नहीं हुई । हम इतना ही जानते हैं कि वे इस सम्बन्ध में बड़े उत्साही थे, और जो कोई नवयुवक उनसे मिलता था उसको उग्रवादी बनने की प्रेरणा देते थे । अपने 'सत्य-सनातन धर्म" (साप्ताहिक) के लेखों द्वारा भी वे यथाशक्ति ऐसे विचारों का प्रचार करते थे ।

इसी बीच में वे साहित्य द्वारा युवकों को देशभक्ति की प्रेरणदायक पुस्तकें भी लिखते रहे । ला० लाजपतराय, मैंजिनी, गेरीबाल्डी, नेपोलियन के चरित्र सन् १९१५ तक लिखे गये । मेजिनी योरोप में गुप्त समितियों का बहुत बड़ा सङ्गठनकर्ता था और उसने अपने प्रयत्नों से इटली फ्रांस और आस्ट्रिया की सरकारों तथा रोम के पोप का लेखनी तथा शस्त्र दोनों प्रकार से मुकाबला करके अन्त में अपने देश को स्वतन्त्र कराके ही चैन ली । राधामोहनजी मैंजिनी के बड़े प्रशंसक थे और उसके विचारों का अधिकाधिक प्रचार करते रहते थे ।

ला० लाजपतराय के जीवन चरित्र के लिखने के लिए तो उन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लालाजी के पिता लाला राधाकिशन जी से खूब पत्र व्यवहार किया था और लालाजी के आरम्भिक जीवन की घटनाओं का पता लगाकर लिखा था। उन्होंने लालाजी के उद्‌गारों में से जिसे सर्व श्रेष्ठ समझकर पुस्तक के आरंभ में दिया है, वह इस प्रकार है—

"यह सच है कि कष्ट सहन किये बिना कुछ प्राप्त नहीं होता। जिन भारतवासियों ने अपने जीवन देश की सेवा में अर्पण कर दिये हैं वे फिर अपने स्वामी आप नहीं रहते। देश भक्ति के किसी कर्तव्य से उत्तेजित होकर प्राण हवन कर देना वीरता है, परन्तु उत्तेजना को वशवर्ती रख कर देशहित के लिये जीवित रहना और भी उत्तम है। पवित्र मृत्यु से पूर्व उच्चतम जीवन आवश्यक है।"

मालूम होता है इस सिद्धान्त ने राधामोहन जी को पूर्ण रूप से प्रभावित किया था। वे दीर्घ-काल तक जीवित रहकर अपने जीवन का उपयोग एकमात्र देश-सेवा के लिए करते रहे, इसमें कोई सन्देह नहीं।

नेपोलियन के जीवन चरित्र की भूमिका में इन्होंने लिखा था—"मैं यह नहीं कहता कि इसमें दोष न थे। परन्तु नेपोलियन अपने समय का बड़ा भारी मनुष्य हितकर्ता, स्वतन्त्रता का पक्षपाती और मानव-मात्र का प्रेमी था।' वास्तव में इन्हीं विशेषताओं के कारण एक युद्धप्रिय सेनापति होते हुये भी नेपोलियन को संसार के इतिहास में प्रशंसनीय स्थान दिया गया है। उसकी देश-भक्ति में कोई सन्देह नहीं। उसने सदैव संकट सह कर और प्राणों का मोह त्यागकर फ्रांस के झण्डे को ऊँचा किया।

क्रान्तिकारी आन्दोलन में सहायता—

इस प्रकार एक सर्वोच्च आदर्श को सामने रखकर राधामोहन जी देश-सेवा और अन्याय पीड़ितों की सेवा में आगे बढ़ते गये। यद्यपि उनके साधन बहुत सीमित थे, तो भी उन्होंने निस्संकोच भाव से कांग्रेस के असहयोग आन्दोलन में ही नहीं, क्रान्तिकारी आन्दोलन में भी उल्लेखनीय भाग लिया। कलकत्ते में किये गये आरम्भिक क्रांति सम्बन्धी कार्यों के विषय में तो हमने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उनसे बहुत कम सुना था, पर सन् १९२८-३० के आसपास उनको इस क्षेत्र में कार्य करने के अभिलाषी अनेक नवयुवकों को प्रोत्साहन और प्रेरणा देते अवश्य देखा था।

उन्हीं दिनों एक बार वे राजा महेन्द्रप्रताप से मिलने की बात कहकर नेपाल गये। वह शिवरात्रि का अवसर था, क्योंकि उन्हीं दिनों "भगवान पशुपति नाथ" के दर्शनों के नाम पर नैपाल में जा सकने की छूट मिलती थी। पर वहाँ से लौट कर उन्होंने कहा कि राजा साहब नैपाल नहीं आ सके और इस कारण उनसे भेंट नहीं हो सकी। हमने भी इस सम्बन्ध में और कुछ नहीं पूछा, क्योंकि उस जमाने की परिस्थिति ही ऐसी थी। अंगरेज सरकार के गुप्तचर हर जगह गुप्त संस्थाओं और क्रांतिवादी व्यक्तियों का भेद मालूम करने के लिये फिरते रहते थे, और ऐसे लोगों को फँसाने की चालें चला करते थे। इसलिये उस समय क्रान्तिकारी संस्थाओं और उनके कार्य-क्रमों का हाल निजी मित्रों को भी उतना ही बतलाया जाता था, जितनी आवश्यकता होती थी। कोई आपस में ऐसी बात पूछता भी नहीं था। दूसरी बात यह भी थी कि राधामोहनजी सार्वजनिक राजनीतिक आन्दोलन में भी भाग लेते रहते थे, और पुलिस वाले उनसे अच्छी तरह परिचित थे, इस लिये वे छुपकर अधिक काम कर भी नहीं सकते थे।

उनकी उस समय की कार्यवाहियों का वर्णन अब बहुत खोज करने पर थोड़ा-बहुत ही जाना जा सकता है। पर हमको इतना मालूम है कि उनको इस विषय में हार्दिक लगन थी, इस लिये जिस प्रकार सम्भव होता कुछ न कुछ किया करते थे। 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी" (क्रांतिकारी दल) की कानपुर शाखा के संचालक सुरेशबाबू की बातचीत से इतना मालूम हुआ था कि राधामोहनजी ने उस संस्था को भी कुछ आर्थिक सहायता दिलवाई थी। उन्होंने कानपुर के कुछ नवयुवकों को एकत्रित कर एक छोटा-सा दल संगठित किया था, जिसका संचालन श्री बिजय कुमार सिन्हा करते थे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जब पुलिस की लगातार निगरानी से बचकर कानपुर जैसे बड़े नगर में कोई अच्छा संगठन बना सकना कठिन जान पड़ा तो सन् १९३४ में वे हमीरपुर के एक पर्वतीय कस्बे में "शिक्षक" की हैसियत से चले गये। उनका वास्तविक उद्देश्य वहाँ पर क्रांतिकारियों का एक गुप्त अड्डा बनाना ही था। पर उस स्थान की जलवायु उनके लिये प्रतिकूल सिद्ध हुआ, जिससे उदर रोग बढ़ गया और एक वर्ष में भीतर ही सन् १९३५ में उनका देहान्त हो गया। इस प्रकार राधामोहनजी जीवन के अन्तिम समय तक अपने आदर्श की पूर्ति में संलग्न रहे और उसी के लिये बलिदान हो गये।

सच्चे वानप्रस्थी राधामोहनजी—

भारत की प्राचीन संस्कृति में समाज के सुचारु संगठन की दृष्टि से चार आश्रमों की स्थापना की गई थी। इनमें से ब्रह्मचर्य और गृहस्थ की आवश्यकता और उपयोगिता तो मनुष्य समझते ही हैं, और संन्यास आश्रम भी विकृत दशा में अभी तक चल रहा है। पर वानप्रस्थ को, जो एक प्रकार से समाज का शिक्षक—मार्ग-दर्शक है लोग प्रायः भूल गये थे। राधामोहनजी ने यद्यपि कभी उसका नाम नहीं लिया, पर जब हम उनके जीवन-कार्यों पर विचार करते हैं तो निस्सन्देह कह सकते हैं, कि वे एक सच्चे "वानप्रस्थी" थे।

भारतीय शास्त्रों में गृहस्थी का उपभोग कर लेने और परिवार के पालन का उत्तर-दायित्व पूरा हो जाने पर वानप्रस्थ ग्रहण करने का विधान है। सामान्य रीति से इसका समय पचास वर्ष की आयु के आसपास माना गया था, पर विशेष अवस्था में इसमें अन्तर भी पड़ जाता था। राधामोहन जी की तीस वर्ष की आयु में उनकी पत्नी का देहान्त हो गया और एकमात्र पुत्र भी इसके छः वर्ष पश्चात् जाता रहा। घर में इनसे छोटे तीन भाई भी मौजूद थे, इस लिये इन्होंने अपना जीवन देश और जाति की सेवामें समर्पित कर देने का निश्चय कर लिया। उनके इस मनोभाव का परिचय "नीति-दर्शन" की भूमिका में दिये इन वाक्यों से मिलता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

'जिस जाति में स्वतंत्रता तथा मान मर्यादा की अपेक्षा धन और प्राण से अधिक प्रेम किया जाता है, वह पतित होकर मिट्टी में मिल जाती है। अतएव देश-प्रेम, मान मर्यादा, स्वत्व, स्वातन्त्र्य की रक्षा के लिये धन और प्राण को तिनके की तरह त्यागने को प्रस्तुत रहना ही मनुष्यत्व है—उन्नति का महामंत्र है। जो साँप की तरह धन को ताकते रहने और हिजड़ों की तरह प्राण बचाने की ही चिन्ता में रहता है, उसको 'मनुष्य' कहना मानो मानवता को कलंकित करना है। मनुष्य की शोभा लेखनी व खड्ग से है न कि धन और रूप से।"

बस इसी आदर्श के अनुसार इन्होंने कलकत्ता पहुँच कर कुछ उभरते हुये बालकों को देश प्रेम की शिक्षा देना और स्वयम् देशोद्धार के संघर्ष में भाग लेना आरम्भ किया। तभी से इनका नाम 'मास्टर साहब' पड़ गया। जैसे ये अपने समीप रहने वाले बालकों को प्रत्यक्ष रूप में शिक्षा देते थे, वैसे ही देश वासियों के मार्ग दर्शन के लिये 'नीति दर्शन' 'देश का धन' 'देशभक्त लाजपत' 'देशभक्त मेजिनी 'जोसेफ गैरीलाल्डी' जैसी प्रेरणाप्रद पुस्तकें लिखीं तथा "सत्य सनातन धर्म" नामक पत्र निकाला, जिससे लोगों में देशभक्ति और देश-रक्षा की भावना प्रज्ज्वलित हो और समाज सुधार की दिशा में भी वे अग्रसर हों। इनका यह मनोभाव इस वाक्य से स्पष्ट प्रकट होता है—

"मेरा यह पक्का मत है कि कोई भी पुस्तक क्यों न हो, जो पाठकों के मनों में जागृति, हृदयों पर स्थाई अंकना (प्रभाव) और नसों में करारापन पैदा न करे वह सर्वथा निकम्मी ही है।"

इन्होंने इस प्रकार की बीस-पच्चीस छोटी-बड़ी पुस्तकें और अनेक लेख लिखे। इनमें से "जर्मनी का अभिमान" जो प्रथम महायुद्ध के मध्य लिखी गई थी अँगरेज शासकों को अपने लिये खतरनाक जान पड़ी, और उसका राजद्रोही बतला कर जब्त कर लिया गया। "देश भक्त मैजिनी" और "जोसेफ गैरीबाल्डी" को "प्रणवीर" के संचालक श्रीसतीदास मूँदड़ा ने प्रकाशित किया। उनको कलकत्ते में छपाने की व्यवस्था राधामोहनजी के प्रिय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

शिष्य श्री गंगाप्रसाद भोतिका ने की थी और अन्त में पूरा तैयार करके गया कांग्रेस में ले जाने का कार्य मैंने भी किया था।

राधामोहनजी का जीवन और कार्य उन कर्म-योगियों की तरह था, जो मानव-जाति की सेवा के लिये निरन्तर श्रम करते रहते हैं और अपने स्वार्थ, सुख व नामवरी की कभी चिन्ता नहीं करते। वास्तव में यही मनुष्य-जन्म की सार्थकता है। जब से हमने उन्हें देखा उनकी वेष-भूषा वानप्रस्थियों जैसी ही रही। एक छोटा-सा कुरता या बन्डी और ढाई-तीन गज की लुंगी, बस इतना ही उनका परिधान था, तथा दो कम्बल और एकाध चादर उनका बिस्तर। सदैव लकड़ी के तख्त या भूमि पर ही सोते थे और भोजन भी बहुत सादा करते थे। यद्यपि उनका परिचय काफी बड़े और सम्पन्न व्यक्तियों से था, तो भी जैसा "विप्लव" की भूमिका में आवागढ़ के राव कृष्णपालसिंह ने लिखा है वे ग्रामीणों की जौ की रोटी और छाछ को बहुत पसन्द करते थे और इसीसे स्वस्थ, चैतन्य और मुस्तैद बने रहते थे। वे कहा करते थे कि "पेट भर अन्न और तन ढकने को कपड़ा मिलता रहे और अमीरी की बेहूदगियों से पाला न पड़े तो मनुष्य दीर्घजीवी, नीरोग और बहुत सुखी रह सकता है।" वे प्रायः नजीर के इस पद्य को कहा करते थे—

"दौलत की तुझे चाट जो पड़ जायगी बाबा।
रुसवा बहुत दुनिया में वह करवायेगी बाबा॥

इस प्रकार समाज से कम से कम लेकर उन्होंने अपनी समस्त योग्यता प्रतिभा, साहस और समय को जन-सेवा के कार्यों में लगा दिया। इसमें उनको जो त्याग, तपस्या, जेल-यात्रा आदि सहन करना पड़ा उसे उन्होंने मातृभूमि का प्रसाद समझ कर प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया। वर्तमान समय में जब "देश-सेवा" और राजनैतिक आन्दोलन एक नये ही मार्ग पर चल पड़े हैं और सेवा तथा कर्तव्य पालन की अपेक्षा अधिकार और लाभ की माँग अधिक की जा रही है, राधामोहनजी का त्यागपूर्ण और सेवाभावी चरित्र हमारे लिये एक बहुत उत्तम आदर्श सिद्ध हो सकता है। उससे उचित प्रेरणा ग्रहण करना हम सबके लिये निश्चय ही कल्याणकारी होगा।

मुद्रक—युग निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि, मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-चरित्र जन-मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मङ्गल का मूल आधार है। इसलिए आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन गाथाओं की अधिकाधिक जानकारी जन-कल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवम् आवश्यक मानी जाती रही है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रांति के लिए जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है, उसमें महामानवों के जीवन-चरित्रों की सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है ऐसे-ऐसे अनेक जीवन-चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन-चरित्र इसी पुस्तक की भांति ३२ पृष्ठों में हैं उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयं पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को भी इसे पढ़ावें, सुनावें।

'प्रकाशक—युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

मुक्त—पचास पैसा

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

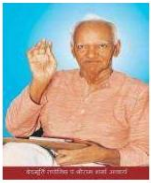

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता** : विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार** : जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक** : मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार** : जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org